Q(1) - कंसवधो काव्य की समीक्षा करें।

Answer - प्रस्तुत काव्य का कथानक श्रीमद्भागवत पर आधृत है और कथावस्तु कृष्ण के व्रज से मथुरा की ओर प्रस्थान से आरम्भ होती है, तथापि अन्तिम सर्ग में अक्रूर के मुख से कवि ने कृष्ण का पूर्व वृत्तान्त वर्णन कराकर उसे एक प्रकार से कृष्ण का कंस वध तक पूर्ण जीवन चरित बना दिया है। इस रचना में कवि पर कालिदास, भारवि और माघ आदि संस्कृत के महाकवियों का स्पष्ट प्रभाव लक्षित होता है। अक्रूर का आगमन स्वागत और स्तुति हमें किरातार्जुनीयम् में किरात के तथा शिशुपालवध में नारद के आगमन वृत्तान्त का स्मरण कराते है। तृतीय सर्ग के आदि में वैतालिकों द्वारा प्रभात का वर्णन शिशुपालवध के प्रभात वर्णन से बहुत कुछ मिलता-जुलता है।

रघुवंश के पाँचवें सर्ग में अज के उद्बोधन के लिए किए गये बन्दिजनों के पाठ से भी अनुप्राणित प्रतीत होता है, क्योंकि कृष्ण वहाँ मथुरा अधिपति नहीं है, बल्कि गोप समुदाय के साथ एक जननायक के रूप में ही गये थे। यहाँ काव्य की दृष्टि से कृष्ण को बन्दियों द्वारा न जगाकर कंस को बन्दियों द्वारा जगाया जाना चाहिए था। अतः अधिपति का वैतालिकों द्वारा उद्बोधन करना ही काव्य का औचित्य है। एक बात और खटकनेवाली है कि जिस प्रमुख घटना के आधार पर इस काव्य का नामकरण किया गया है उस प्रमुख घटना का विस्तार से वर्णन नहीं हुआ है।
कवि ने दो एक पद्य में ही चलता वर्णन कर दिया है

इसकी अपेक्षा तो चोबी और चाणूर आदि मल्लों का वध अधिक विस्तार के साथ वर्णित है। तथा यह वर्णन वीरोचित भी नहीं है। पर कंस के वध के निरूपण में वीररस का परिपाक नहीं हो पाया है, उद्दीपन और आलम्बन आदि भाव-विभावों को उद्दीपन होने का अवसर ही नहीं मिल है। अतः प्रमुख घटना की वर्णन-शैथिल्य इस काव्य का एक बहुत बड़ा दोष है। इसके होने पर भी यह तो मानना ही पड़ेगा कि कथावस्तु का केन्द्र कंसवध की घटना है। समस्त कथावस्तु इसी केन्द्रबिन्दु के चारों ओर चक्कर लगाती है।

अतः प्रधान घटना होने के आधार पर काव्य के नामकरण का औचित्य सिद्ध हो जाता है।